इकाई 16 चीन क्रांति से सुधार तक (1949-1978)

इकाई की रूपरेखा

16.0 उद्देश्य

16.1 प्रस्तावना

16.2 उत्तर मुक्तिकाल का चीन : पहला दशक

16.2.1 भूमि सुधार और विवाह कानून

16.2.2 स्वास्थ्य सेवा और साक्षरता

16.2.3 कृषि सहकारिताकरण

16.2.4 प्रारम्भिक औद्योगिकरण और शिक्षा में सोवियत भूमिका

16.2.5 माओ का सोवियत शैली की अर्थव्यवस्था के साथ असंतोष

16.2.6 हंडरेड फ्लॉवर अभियान (सौ फूल अभियान) और दक्षिणपंथी विरोधी आंदोलन

16.3 द ग्रेट लीप फॉरवर्ड (जीएलएफ)

16.3.1 राजनीति कमान में

16.3.2 कम्यून प्रणाली

16.3.3 जीएलएफ की विफलता

16.3.4 पार्टी में आंतरिक संघर्ष और लिन बियाओ का उभरना

16.3.5 जीएलएफ को संयमित करना

16.4 चीन-सोवियत मन मुटाव

16.5 सोसलिस्ट एजुकेशन मूवमैन्ट (समाजवादी शिक्षा आन्दोलन)

16.6 द ग्रेट प्रोलितेरियन कल्चरल रिवोल्यूशन (जीपीसीआर)-
(महान सर्वहारा-सांस्कृतिक-क्रांति)

16.6.1 जीपीसीआर का वैचारिक औचित्य

16.6.2 पार्टी पर हमला

16.6.3 बुद्धिजीवियों पर हमला

16.6.4 रेड गार्डस

16.6.5 उत्पीड़न और दंड

16.6.6 जीपीसीआर के प्रथम चरण का अंत

16.6.7 जीपीसीआर : बाद का चरण और लिन बियाओ का उत्थान और पतन

16.6.7.1 जाऊ एनलाई (Zhou Enlai) पुन : जिम्मेदारी में

16.6.7.2 चीनी-अमेरिकी मेल-मिलाप की शुरुआत

16.7 माओ की मृत्यु, 'गैंग ऑफ फोर' की गिरफ्तारी और हुआ गुओफैंग का उद्भव

16.8 सुधार काल

16.9 सारांश

16.10 शब्दावली

16.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

16.0 उद्देश्य

इस इकाई को पढ़ने के बाद आप यह समझ पायेंगे कि चीन के नेतृत्व और विशेषकर माओ जेडोंग (Mao Zedong) ने चीन को कैसे एक सामंती समाज से आधुनिक समाजवादी व्यवस्था में रूपान्तरित करने की कोशिश की। यह इकाई चीन में 1978 तक हुई प्रमुख घटनाओं और आंदोलनों को समाविष्ट करती है। 1949 से 1978 तक के वर्षों को चीन में माओवादी काल कहा जाता है क्योंकि चेयरमैन माओ जेडोंग (Mao Zedong) सर्वोच्च नेता बने रहे और चीनी राज्य का शासन समाजवाद की माओवादी व्याख्या के माध्यम से चलाया गया जिसका प्राथमिक उद्देश्य एक समतावादी समाज का निर्माण करना था।

16.1 प्रस्तावना

एक अक्टूबर, 1949 को पीपुल्स लिबरेशन आर्मी (पीएलए), चीन की कम्युनिस्ट पार्टी (CPC) की सैन्य शाखा ने जियांग जिशी (च्यांग-काईशेक) के नेतृत्व में गुंओमिनदांग (कुओ-मितांग) को एक लम्बे गृह युद्ध के बाद हराकर पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चायना की स्थापना की। गुओमिनदांग ताइवान प्रांत के द्वीप प्रांत में भाग गया जो पीपल्स रिपब्लिक ऑफ चायना के नियंत्रण से वास्तव में स्वतंत्र बना रहा। सीपीसी के अध्यक्ष माओ जेडोंग (Mao Zedong) नें प्रतिकात्मक तियानआनमेन (गेट ऑफ हैवनली पीस) स्कावायर में एक भाषण दिया जिसमें उन्होंने कहा कि ''चीन खड़ा हो गया है''।

16.2 उत्तर मुक्तिकाल का चीन : पहला दशक

चीन की मुक्ति, जैसा सीपीपी ने घोषित किया था, सामंतवाद और साम्राज्यवाद के खिलाफ लंबे संघर्ष के बाद हासिल हुई थी। नई सरकार का तात्कालिक कार्य जापानी और विभाजनकारी लम्बे गृह युद्ध से बर्बाद देश का पुनर्निर्माण शुरू करना था। प्रशासनिक कार्यों को करने के लिए बीजिंग (पेकिंग) में केन्द्रीय जन सरकार की स्थापना की गई थी। धीरे-धीरे, प्रशासनिक कार्यालयों को सभी स्तरों पर पुनः स्थापित किया गया। सड़कें, पुल, रेलवे लाइन और इमारतें जो नष्ट हो चुकी थी, उन्हें फिर से बनाया गया। फिर उस समय सोवियत संघ जिसने गृह युद्ध और गृह युद्ध से पहले सी पी सी का समर्थन किया था, वह चीन के पुनर्निर्माण में मदद करने के लिए एक बड़े पैमानें पर सहायता कार्यक्रम के साथ आगे आया। अंतर्राष्ट्रीय सम्बन्धों के इतिहास में कभी भी एक राष्ट्र ने दूसरे राष्ट्र की उस हद तक आर्थिक रूप से सहायता नहीं कि जितनी की सोवियत संघ ने चीन की की थी।

16.2.1 भूमि सुधार और विवाह कानून

चूंकि चीनी क्रांति अनिवार्य रूप से एक किसान क्रांति रही है, इसलिए सीपीसी की किसानों के प्रति प्रतिबद्धता के कारण यह जरूरी था कि वह ग्रामीण जनता की आजीविका में सुधार करने और ग्रामीण अचंलों में असमानता, शोषण और गरीबी को दूर करने के महत्वपूर्ण मुद्दों का समाधान करती। 1950 से 1952 के बीच पूरे चीन में ग्रामीण क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर भूमि सुधार का अभियान चलाया गया। भूमि क्रांति के नाम से इस आंदोलन ने ग्रामीण चीन में मौजूदा गहरी असमानताओं को खत्म करने में मदद की। हालांकि, यह बड़े पैमाने पर हिंसा के साथ हुआ। भूमि सुधारों के कार्यान्वयन के दौरान अनेक धनी भू-स्वामियों को अधिकारिक रूप से या स्थानीय लोगों द्वारा मार दिया गया।

1950 में अपनाए गए एक महत्वपूर्ण कदम में विवाह कानून को पारित किया गया। जिसका लक्ष्य गरीब किसान स्त्रियों की मदद करना था। चीनी महिलाओं को भी, जैसे उस समय भारत में भी, आर्थिक संसाधनों की दृष्टि से कोई सुरक्षा प्रदान नहीं थी और वे पूर्णतया परिवार के पुरुष सदस्यों पर निर्भर थी। विशेष रूप से ग्रामीण क्षेत्रों में, पत्नियों को अक्सर छोड़ दिया जाता था और उन्हें कोई कानूनी आसरा नहीं था। इसलिए विवाह कानून ने परिवार और समाज में महिलाओं को सुरक्षा और प्रतिष्ठा प्रदान की। भूमि सुधारों के साथ विवाह कानून ने ग्रामीण चीन में वंचितों को अधिकार देकर परिवर्तन करने में मदद की।

16.2.2 स्वास्थ्य सेवा और साक्षरता

मुक्ति के पहले दशक में बुनियादी स्वास्थ्य सेवा और साक्षरता के क्षेत्रों में उल्लेखनीय प्रयास किये गये जिन्होंने सकारात्मक परिणाम दिखाए। गाँव में निवारक दवाओं और स्वास्थ्य सेवा केन्द्रों ने मृत्युदर और रुग्नता दर में भारी गिरावट ला दी। महिलाओं को गर्भावस्था, प्रसव के दौरान और बच्चे पालने के शुरुआती चरणों में मातृत्व और बच्चों की देखभाल में लाभ प्रदान किये गए। ग्रामीण इलाकों में चिकित्सा सहायक के रूप में काम करने के लिए बहुत कम समय में बड़ी संख्या में किसानों को प्रशिक्षित किया गया था। *नंगे पॉव डॉक्टर* कहे जाने वाले इन लोगों ने उन ग्रामीण लोगों को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवाएँ प्रदान की जिनके लिए अस्पताल अक्सर दूर थे। ग्रामीण क्षेत्रों में बुनियादी शिक्षा और साक्षरता को बढ़ावा दिया गया था। और किसान जो बड़े पैमाने पर अनपढ़ थे उन्हें औपचारिक और गैर-औपचारिक शिक्षा दी गई और ग्रामीण चीन में साक्षरता दर एक दशक में पाँच प्रतिशत से बढ़कर पचास प्रतिशत से अधिक हो गई थी। सीपीसी के अग्रिम संगठनों, जिसमें महिला संघ युवा और किसानों के संगठन शामिल थे, के द्वारा अशिक्षा विरोधी अभियान बड़े उत्साह के साथ चलाए गए। ग्रामीण अचंलों में महिलाएँ साक्षरता अभियानों की प्रमुख लक्ष्य बन गई। इसके बाद बड़ी संख्या में प्राथमिक विद्यालय स्थापित किये गये जिन्होंने पूरे चीन में साक्षरता को उच्च स्तर तक पहुंचाया, जो आज हम देखते हैं।

16.2.3 कृषि सहकारिताकरण

भूमि सुधार के बाद जो 1952 तक पूरा हो गया था, सीपीसी ने चीन के गाँवों में सहकारी समितियों की शुरुआत की। सबसे पहले 'म्युचवल एड़ टीमों' का गठन किया गया जिसके तहत चार से पाँच परिवारों ने अपनी भूमि को इकट्ठा करके एक-दूसरे के खेतों में मदद करनी थी। अगले चरण में निचले स्तर के एग्रीकल्चर प्रोड्यूसरर्स कॉपरेटिव (एपीसी) ने म्यूचवल एड़ टीमों की जगह ले ली और इनमें बीस से तीस परिवार अपनी भूमि, उपकरण, श्रम को साझा कर रहे थे। दो-एक साल बाद निचले स्तर के एपीसी भंग कर दिये गये और उसकी जगह खेती के लिए अपनी संपत्तियों को साझा करने वाले 200-300 परिवारों वाले उच्च एपीसी बने। लगभग पूरे देश में कृषि उत्पादकों की सहकारी समितियों स्थापित की गई थी। 1956 में यह घोषित किया गया कि ग्रामीण चीन में सोशालिज्म या 'समाजवाद के लिए संक्रमण' हो चुका है।

16.2.4 प्रारम्भिक औद्योगिकरण और शिक्षा में सोवियत भूमिका

चीन का औद्योगिकरण करने के लिए सोवियत संघ के मार्ग दर्शन में प्रथम पंचवर्षीय योजना (1953-1957) को एक बड़ी सफलता माना गया है। अनेक कारखाने स्थापित किये गये और कई बुनियादी ढ़ाचों की परियोजनाएँ शुरू की गई। इन सभी के लिए पूंजी, विशेषज्ञता और तकनीकी सोवियत संघ से आई थी।

सोवियत विशेषज्ञों को सरकार की हर शाखा और चीन के हर क्षेत्र में भेजा गया था। उदाहरण के लिए, शिक्षा मन्त्रालय में शीर्ष के आधिकारिक पद रूसियों के पास थे और चीनी उनके अधीन काम करते थे। रूसी चीन की दूसरी भाषा बन गई। सोवियत के आग्रह पर उच्च शिक्षा प्रणाली को भी पूरी तरह बदल दिया गया। विकसित होने वाले औद्योगिकरण के लिए एक कार्य शक्ति को प्रशिक्षित करने के लिए तृतीयक स्तर पर अनेक तकनीकी प्रशिक्षण संस्थानों को स्थापित किया गया। कई विश्वविद्यालययों और कॉलेजों का विलय करके उच्च शिक्षा की संरचना को युक्तिसंगत बनाया गया।

16.2.5 माओ का सोवियत शैली की अर्थव्यवस्था के साथ अंसतोष

हालांकि शुरुआत वर्षों में कुछ समस्याएं सामने आने लगी। इस तथ्य का संकेत इससे मिलता है कि सीपीसी ने चेयरमैन माओ जेडॉंग के कहने पर तथाकथित '3 विरोधी' और '5 विरोधी' अभियान चालू किये। यह अनिवार्य रूप से भ्रष्टाचार, बर्बादी, अक्षमता और नौकरशाही के खिलाफ अभियान थे। विकास का सोवियत प्रारूप जो तेजी से विकास को सुनिश्चित करने के लिए था, चीनी समाज में असमानता और अर्थव्यवस्था में असंतुलन पैदा कर रहा था। माओ जेडॉंग का इन नीतियों से धीरे-धीरे मोह भंग हो रहा था। 1956 में उन्होंने सोवियत संघ की कम्युनिस्ट पार्टी (सीपीएसयू) की बीसवीं कांग्रेस में भाग लिया, जहाँ महासचिव निकिता ख्रुश्चेव ने अपने तथाकथित गुप्त भाषण में अपने पूर्ववर्ती जोसेफ स्टालिन की दृढ़ता से निंदा की। (स्टालिन को माओ और अनेक अन्य लोगों ने कम्युनिस्ट आन्दोलन में एक महान और निर्विवाद नेता के रूप में देखा था और अनेक लोगों ने उनसे प्रेरणा ली थी)। इस भाषण ने माओ को स्तब्ध कर दिया। सोवियत संघ के साथ उसके संबंध तब से असहज होने लगे।

16.2.6 हंडरेड फ्लॉवर अभियान (सौ फूल अभियान) और दक्षिणपंथी विरोधी आन्दोलन

माओ चीन की राजनैतिक अर्थव्यवस्था के मार्ग को बदलना चाहते थे। हालाँकि, कुछ करने से पहले वह यह सुनिश्चित करना चाहते थे कि उन्हें अपने लोगों विशेषकर बुद्धिजीवियों का पर्याप्त समर्थन मिले। माओ का हमेशा से ही बुद्धिजीवियों के साथ एक असहज रिश्ता था और अक्सर वह यह मानते थे कि बुद्धिजीवी पर्याप्त क्रांतिकारी नहीं थे, और इसलिए वास्तव में एक सही में क्रान्तिकारी समाज बनाने के लिए वे रास्ते का एक बड़ा रोड़ा थे। 1956 में माओ ने सौ फूल अभियान शुरू किया। इस अभियान के पीछे कथित विचार था कि चीनी राष्ट्र, सरकार और राज्य नीतियों से सम्बन्धित सभी मामलों पर स्वतंत्र और खुली चर्चा होनी चाहिए। इसका नारा था 'सौ फूल खिलने दो, और विचारों के सौ मतों को संघर्ष करने दो' जिसका अर्थ था कि सभी विचारों और मतों का निर्भय प्रसारण होना चाहिए। यह आन्दोलन 1957 के मध्य में शुरू किया गया और तीन महीने तक चला जब बड़ी संख्या में बुद्धिजीवियों ने सरकार की नीतियों की आलोचना की और अनेक लोगों ने पार्टी और उसकी विचारधारा पर हमला किया। इसे अचानक बंद कर दिया गया क्योंकि माओ के विचार में आलोचना नियन्त्रण से बाहर हो रही थी। कुछ दिनों के अन्दर ही इसके विरुद्ध एक आन्दोलन, जिसको दक्षिणपंथी विरोधी अभियान नाम दिया गया, शुरू किया गया। इस दौरान तीखी आलोचना करने वालों में से कई का अलग-अलग तरीके से उत्पीड़न किया गया। कुछ को 'पुनर्शिक्षा के लिए श्रम-शिविरों में भेजा गया था, दूसरों को या तो कैद कर लिया गया था या उनकी नौकरियों से हटा दिया गया था। अनेकों को प्रतिक्रांतिकारी या दक्षिणपंथी करार दिया गया। अभियान नें मुक्त भाषण के अंत को चिह्नित किया।

16.3 द ग्रेट लीप फॉरवर्ड (जीएलएफ)

1958 में चेयरमैन माओ ने विकल्प के रूप में विकास की एक नई रणनीति को लागू करने का निर्णय लिया, इसे ग्रेट लीप फॉरवर्ड (जीएलएफ) कहा जाता था। कुछ विद्वानों के अनुसार, माओ को इस नये जोखिम भरे काम के लिए वरिष्ट सीपीसी के सहयोगियों की सहमति प्राप्त नहीं थी, लेकिन मुख्य रूप से उन्होंने ग्रामीण क्षेत्रों में प्रांतीय नेताओं का समर्थन प्राप्त किया। पार्टी की पोलित ब्यूरो में जीएलएफ को शुरू करने को लेकर तीखा टकराव हुआ। यह बाहरी दुनियाँ को बहुत बाद में पता चला। उस समय सरकार द्वारा नियंत्रित मिडिया ने नेतृत्व में पूर्ण एकता का आभास दिया।

16.3.1 राजनीति कमान में

जीएलएफ नीतियों का एक पुलिंदा था, जिसमें मानवीय प्रयास और क्रांतिकारी उत्साह को पूंजी, प्रौद्योगिकी और विशेषज्ञता पर वरीयता दी गई थी। माओ ने दावा किया कि जीएलएफ से चीन 'लाल और विशेषज्ञ' के शासन के तहत् रहेगा, जिसका मतलब था कि विचारधारा और विकास दोनों को समान महत्व दिया जाएगा। हालांकि वास्तव में विशेषज्ञता की कीमत पर 'लाल' हावी रहा। दूसरे शब्दों में, राजनीति/विचारधारा को 'अर्थशास्त्र' पर तरजीह मिली। इस अवधि का एक नारा था 'राजनीति कमान में'।

जीएलएफ के दौरान ग्रामीण औद्योगिकरण को बढ़ावा देने के लिए बड़ी संख्या में श्रम गहन परियोजनाएँ शुरू की गई। कुछ कदम जो उठाए गये उनको अर्थशास्त्रियों द्वारा तर्क संगत नहीं माना गया। उदाहरण के लिए, इस्पात उत्पादन में चीन की क्षमता को बढ़ाने के लिए लाखों ग्रामीण घरों में पिछवाड़े में भट्टियाँ बनाई गई और कहीं से भी किसी रद्दी स्टील को एकत्र करके उनमें लाया गया ताकि राज्य के अधिकारी उसे कारखानों में ले जा सके। जीएलएफ का एक और उद्देश्य था कि एक समतावादी समाज के निर्माण के लिए भौतिक प्रोत्साहनों को खत्म किया जाए। यह कई तरीकों से किया गया था। उदाहरण के लिए, जिन खेत मजदूरों ने अधिक और बेहतर काम किया उनकों नैतिक प्रोत्साहन पेश किए गए। वेतन में वृद्धि की बजाए उन्हें राज्य अधिकारियों द्वारा 'आदर्श श्रमिक' घोषित किया गया। ग्रामीण आय में समानता लाने के लिए किसानों के अप्रधान व्यवसायों को खत्म कर दिया गया। सभी ग्रामीण समाजों की तरह किसान फसल के मौसम के बाद अपनी आय बढ़ाने के लिए पूरक के रूप में मुर्गी पालन, सब्जियाँ उगाना, मछलियाँ पकड़ना, और हस्तशिल्प जैसे कार्यों में संलग्न होते थे। इसका मतलब यह था कि किसानों की आय केवल कृषि कार्यों से ही होनी थी।

16.3.2 कम्यून प्रणाली

जीएलएफ का मुख्य घटक ग्रामीण इलाकों में ग्रामीण कम्यून की स्थापना था। कम्यून प्रणाली में त्रिस्तरीय संरचना थी – उत्पादन की टीम, उत्पादन की ब्रिगेड और कम्यून। उत्पादन की टीम में लगभग बीस से पचास परिवार शामिल थे और यह सबसे नीचे की आर्थिक इकाई थी। इन परिवारों को अपनी जमीन और खेती को साझा करना होता था। फसल को एक निश्चित मूल्य पर राज्य को बेचा जाता था। करों में कटौती के बाद आय को टीम के प्रत्येक कार्यशील सदस्य को उसके द्वारा अर्जित कार्य-बिन्दुओं के आधार पर वितरित किया जाता था। कार्य-बिन्दुओं को एक पूर्व-निर्धारित प्रणाली के द्वारा कार्य-बिन्दु रिकार्डर के द्वारा दिया जाता था, जो टीम का एक सदस्य और पार्टी का भी कैडर होता था। कृषि श्रमिकों के बीच आय का अंतर कम से कम हो, यह सुनिश्चित करने के लिए समतावाद के सिद्धान्त के आधार पर भी कार्य-बिन्दु सौपें गये थे। प्रत्येक उत्पादन टीम

में एक पार्टी समिति होती थी जिसका कार्य उत्पादन और आय के वितरण की सम्पूर्ण प्रक्रिया को संचालित करना था। उत्पादन टीम के ऊपर उत्पादन ब्रिगेड़ थी। जिसमें कई उत्पादन दल शामिल थे। यदि उत्पादन टीम एक आर्थिक इकाई थी तो उत्पादन ब्रिगेड एक सामाजिक इकाई थी। इसकी जिम्मेदारियों में प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा, बुनियादी शिक्षा और आवास प्रदान करना शामिल थे। कई उत्पादन ब्रिगेडों ने मिलकर एक कम्यून बनाया जो एक राजनीतिक इकाई थी। कम्यून में एक सरकार थी। जिसका मुख्य कार्य कानून और व्यवस्था को बनाए रखना और कर-संग्रह का था। चीनी सरकार ने जीएलएफ को सफल बनाने के लिए और उत्पादन बढ़ाने के तरीके के रूप में प्रत्येक कम्यून को फसल उत्पादन का एक कोटा सौंपा। कम्यून के कोटे को ब्रिगेडों में, बिग्रेड के कोटे को उत्पादन टीमों के बीच विभाजित किया जाता था। फसल के मौसम के अंत में प्रत्येक उत्पादन टीम को एक निश्चित मात्रा में अनाज का उत्पादन करना था। यदि वे कोटे से अधिक उत्पादन करते तो उन्हें आदर्श टीम या ब्रिगेड या कम्यून कहे जाने जैसे नैतिक प्रोत्साहन दिये गये। ये कदम इस उम्मीद से उठाए गए थे कि इनसे चीन की कृषि अर्थव्यवस्था को प्रोत्साहन मिलेगा और खाद्य उत्पादन बढ़ेगा। हालाँकि, कृषि उत्पादन बढ़ने की बजाए इसका ठीक उल्टा हुआ। जीएलएफ एक विफलता थी।

16.3.3 जीएलएफ की विफलता

ग्रामीण क्षेत्रों में जीएलएफ की विफलता का एक महत्वपूर्ण कारण कोटा प्रणाली साबित हुई। कोटे तक पहुँचने या इसे पार करने के लिए अनेक पार्टी कैडरों ने भूमि पर गलत फसलों को उगाया जो उन भूमियों के लिए उपयुक्त नहीं थी। इससे भूमि का अपक्षरण हुआ। कई मामलों में वन भूमि को कृषि भूमि में परिवर्तित किया गया जिससे वनोन्मूलन हुआ। पुरस्कार जीतने के लिए बहुत से कैड़रों ने झूठे सांख्यिकीय आँकड़े दिये। इन प्रशासनिक खामियों के बावजूद, जिस कारण ने जीएलएफ को एक महा विशाल भूल बनाया वह बुरे मौसम की परिस्थितियों का जारी रहना था जिसके कारण आधुनिक युग में चीन के सबसे बुरे अकालों में से एक अकाल का आना था। भुखमरी और कुपोषण के कारण लाखों चीनी मारे गये। अधिकांश मौतें चीन के सुदूर पर्वतीय क्षेत्रों में हुई क्योंकि सड़कों और वाहनों के अभाव में उन स्थानों तक खाद्य-सामग्री नहीं पहुँचाई जा सकी।

16.3.4 पार्टी में आंतरिक संघर्ष और लिन बियाओ का उभरना

जीएलएफ की विफलता ने कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व के बीच टकराव को तेज कर दिया। 1959 की शुरुआत में ही इस दुस्साहस के लिए माओ की आलोचना की गई थी। उनके करीबी सहयोगी, लाँग मार्च के कॉमरेड रक्षा मन्त्री पेंग देहुअई, जिन्होंने जीएलएफ की तीखी आलोचना की, उन्हें पार्टी ने निकाल दिया गया और उन्हें रक्षा मन्त्री के रूप में अपना पद खोना पड़ा। उनके स्थान पर एक अपेक्षाकृत नौजवान पीएलए अधिकारी को लाया गया जिसका नाम लिन बियाओ था। लिन बियाओ नें अपना कार्यकाल पीएलए को नया दिशा-निर्देश देकर शुरू किया। जबकि पूर्व रक्षा मन्त्री इसके गुरिल्ला युद्ध के दिनों से बाहर लाकर सोवियत समर्थन के साथ सेना के आधुनिकरण के प्रयास कर रहे थे, लिंग बियाओ ने माओवादी पथ का अनुगमन करते हुए इसे और अधिक क्रांतिकारी बना दिया। सेना में वैचारिक मनोरोपण और राजनीतिकरण नियमित हो गये। 1965 तक पीएलए में सैनिकों के बीच समानता की भावना लाने के लिए सभी रैंकों का समाप्त कर दिया गया था। पीएलए को सभी चीनियों के लिए एक आदर्श घोषित किया गया और 'पीएलए से सीखें' एक राष्ट्रव्यापी अभियान बन गया।

16.3.5 जीएलएफ को संयमित करना

जीएलएफ के कारण हुई तबाही और व्यवधानों को महसूस करते हुए सीपीसी ने शुरू में उठाए गए कठोर कदमों को नरम करने का फैसला लिया। उदाहरण के लिए, अनाज उत्पादन के लिए कोटा खत्म कर दिया गया और किसानों को अप्रधान व्यवसायों से आय की अनुमति दे दी गई। हालाँकि, यहाँ यह उल्लेख करना आवश्यक है कि जीएलएफ में विशेष रूप से महिलाओं के सम्बन्ध में कुछ सकारात्मक तत्व थे। बाल जन्म के दौरान मातृत्व लाभ के अतिरिक्त कम्यूनों ने महिलाओं को घर के दैनिक उबाऊ कामकाज से मुक्त करने के लिए डे केयर सेन्टर और भोजनालय स्थापित किए ताकि वे अधिकतर समय उत्पादन कार्य के लिए समर्पित कर सकें और पुरुषों के समान कार्य बिन्दु अर्जित कर सके। आय समानता के ऐसे कदमों से महिलाओं को परिवार और समाज के भीतर समान दर्जा मिला।

बोध प्रश्न 1

1) जीपीआरसी के प्रारंभिक वर्षों में सीपीसी सरकार ने अपने शासन को सुदृढ़ करने के लिए क्या कदम उठाये? दस पंक्तियों में उत्तर दीजिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

2) ग्रेट लीप फॉरवर्ड क्या थी? यह क्यों विफल हुई?

....

....

....

....

16.4 चीन-सोवियत मन मुटाव

1959 में सोवियत संघ के साथ सम्बन्धों में खटास आ गई। उस वर्ष सोवियत संघ ने चीन के साथ एक प्रस्तावित नागरिक परमाणु समझौते को एकतरफा निरस्त कर दिया और चीन ने सभी सोवियत विशेषज्ञों को, जो हजारों की तादाद में थे, बहत्तर घंटे के भीतर देश

छोड़ने का आदेश देकर अपनी प्रतिक्रिया व्यक्त की। सोवियत वापसी के साथ आर्थिक स्थिति और अधिक खराब हो गई क्योंकि बहुत सी परियोजनाओं को बीच में छोड़ दिया गया था और इसमें सड़कें, पुल, हवाई अड्डे और शिपयार्डस के निर्माण शामिल थे। रूसी भाषा के हजारों अनुवादकों और दुभाषियों ने खुद को रातोंरात बेरोजगार पाया। ऐसा कहा जाता है कि 1959-62 के अकाल में इतने लोगों की जान नहीं गई होती अगर उन तक भोज्य सामग्री पहुँचाई जा सकती। रूसियों द्वारा पीछे छोड़ दी गई आधी निर्मित सड़कें और साथ ही परिवहन वाहन जो निर्माण की प्रक्रिया में थे, उनका कोई फायदा नहीं था। 1962 में दोनों कम्युनिस्ट राज्यों के बीच सम्बन्ध उस बिन्दु तक पहुँच गये थे जहाँ से कोई वापसी संभव नहीं थी। इसी समय चीन-भारत सीमा युद्ध के दौरान सोवियत संघ ने चीन का पक्ष ना लेकर तटस्थ रहा। 1959-1962 के वर्षों को विक्षोभ और अनिश्चितताओं द्वारा चिह्नित किया गया था। माओ धीरे-धीरे पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के बीच अलग-थलग पड़ते जा रहे थे।

16.5 सोसलिस्ट एजुकेशन मूवमैन्ट (समाजवादी शिक्षा आन्दोलन)

हालाँकि जीएलएफ के अनेक प्रावधानों को मुलायम कर दिया गया था लेकिन माओ के जीवन काल के दौरान कम्यून प्रणाली को ध्वस्त नहीं किया गया था। हालांकि, आर्थिक स्थिति विकट थी लेकिन, माओ ने एक समतावादी समाज के निर्माण की अपनी क्रांतिकारी भाषणबाजी जारी रखी, चाहे वह किसी भी कीमत पर हो। माओ ने महसूस किया कि उनकी समाजवादी परियोजना खतरे में थी, और समाज की वैचारिक पवित्रता को बनाए रखने के लिए उन्होंने 1962 में समाजवादी शिक्षा आन्दोलन (एसईएम) का शुभांरम्भ किया। माओ ने कहा कि शिक्षित युवाओं को सीखनें के लिए ग्रामीण इलाकों में जाना चाहिए, जैसा इस नारे में था 'पहाड़ों के ऊपर तक और गाँवों के नीचे तक'। ऐसा अनुमान लगाया गया था कि 'युवाओं के निष्कासन' (शियाफांग) की नीति के चलते कम से कम सौलह मिलियन युवाओं को अनिश्चित काल के लिए अक्सर बहुत दूर दराज के ग्रामीण क्षेत्रों में रहने और काम करने के लिए भेजा गया। शहरों में रहने वाले सभी युवाओं के लिए यह अनिवार्य था। इन्कार करने का मतलब ना केवल बेरोजगार रहना था बल्कि एक प्रति क्रांतिकारी के रूप में लेबल लग जाना भी था। माओ के अनुसार यह कदम आवश्यक था क्योंकि चीन का शिक्षित वर्ग किसानों की कठिनाइयों से बेखबर था और दूर-दराज और पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वाले लोगों के साथ रहने और उनके साथ काम करने का यह अनुभव उन्हें उनके जीवन की वास्तविकता को देखने और उनकी सोच में रूपान्तरण लाने के लिए प्रेरित करेगा और वे फिर क्रांतिकारी बुद्धिजीवी बन जायेंगे।

एसईएम इस बात की साक्षी थी कि कई योग्य इंजीनियर सूअरखानों में काम कर रहे थे, विज्ञानशोधकर्ता खेतों की जुताई कर रहे थे, चिकित्सा के छात्र पहाड़ी इलाकों में सड़क निर्माण के लिए खुदाई कर रहे थे आदि। कार्य का किसी की योग्यता और कौशल से कोई सम्बन्ध नहीं था। एसईएम ने अनेकों परिवारों को तितर बितर कर दिया क्योंकि पति, पत्नी और बड़े हो चुके बच्चों को अक्सर देश के विभिन्न हिस्सों में जिम्मेदारी सौंपी गई। भोजन, आवास और अन्य सुविधाओं के मामले में इन दूर-दराज के इलाकों में जीवन बहुत कठिन था। हालांकि, युवाओं को शहरों से दूर भेजने के इस मुद्दे पर माओ के सहयोगियों के विरोध का कोई सबूत नहीं हैं। पर्यवेक्षकों का मानना है कि अगर यह कार्यक्रम नहीं किया जाता तो पूरे चीन में एक बेकाबू उथल-पुथल हो गई होती। एक विशालकाय बेरोजगारी की समस्या चीनी समाज में फैली हुई थी। इस 'नौकरी नहीं विकास नहीं' की परिस्थिति में यह क्षमता थी कि लोगों की प्रतिक्रिया के कारण पहले सीपीसी में लोगों का विश्वास खत्म होता और फिर वह सत्ता खो बैठती। इस आसन्न खतरे की संभावना को देखते हुए पार्टी नेतृत्व एसईएम का समर्थन करने में माओ के साथ रहा।

पार्टी के शीर्ष नेतृत्व के भीतर युवाओं के निष्कासन पर सहमति के बावजूद, देश में विकास की कमी पर असंतोष था। पीएलए नागरिक मामलों में अधिक लिप्त हो गया। उसके अधिकारियों ने राजनैतिक शिक्षा और पुनः शिक्षा पर सभी नागरिकों के लिए अनिवार्य कक्षाएँ थी। इनमें उपस्थित होने से इन्कार करने पर दण्डात्मक कार्यवाही हो सकती थी। मार्क्सवाद-लेनिनवाद-माओ जेडोंग (Mao Zedong) के विचारों पर कार्यालयों, कारखानों, विश्वविद्यालयों, स्कूलों और अड़ोस-पड़ोस के इलाकों में कक्षाएँ आयोजित की गई। चीन के सभी कामकाजी लोगों को रोजगार देने वाली एजेंसी को कार्य इकाई (*दानवेई*) कहा जाता था। इसनें सभी के लिए पालने से क्रब तक सेवाओं की पेशकश की। यह सभी रोजगार में लगे हुए लोगों के लिए सामाजिक सुरक्षा के संदर्भ में बहुत सकारात्मक था, लेकिन अनेक तरह से अत्याचारी था। कार्य इकाई ने व्यक्तियों को एक कार्ड प्रदान किया जिसे *हुकोउ* (*Hukou*) कहा जाता था। यह एक प्रकार का आन्तरिक पासपोर्ट था जो राशन, आवास, बच्चों की स्कूली शिक्षा, आदि जैसी सुविधाओं का लाभ उठाने में मदद करता था। हुकोउ एक घरेलू पंजीकरण प्रणाली थी, जिसकी प्राचीन जड़ें थी और जिसने लोगों द्वारा उनके निवास या नौकरियाँ को बदलना लगभग असंभव बना दिया।

16.6 द ग्रेट प्रोलितेरियन कल्चरल रेवोल्यूशन (जीपीसीआर) (महान सर्वहारा-सांस्कृतिक क्रांति)

पर्वतीय क्षेत्रों में गरीब किसानों और अन्य वंचितों के जीवन का अनुभव महसूस कराने के लिए लाखों युवाओं का निष्कासन और साथ-साथ शहरी क्षेत्रों में बड़े पैमाने पर राजनीतिक मतारोपण भी माओं के लिए एक क्रान्तिकारी समाजवादी समाज को सुदृढ़ करने के लिए र्प्याप्त नहीं था। 1966-76 के वर्षों में एक ओर अधिक तीव्र और व्यापक आन्दोलन ने चीन को घेर लिया। यह महान सर्वहारा सार्वजनिक क्रान्ति थी (जीपीसीआर)। इस आन्दोलन की तुलना में पहले के अभियान और आन्दोलन हल्के दिखाई पड़ते हैं।

16.6.1 जीपीसीआर का वैचारिक औचित्य

माओ जेडोंग (Mao Zedong) ने एसईएम के अन्त में भी दृढ़ता से यकीन किया कि मुक्ति के सत्ररह वर्षों के बाद भी चीनी समाज द्वारा समाजवाद का आन्तरिकरण नहीं किया गया था। उन्होंने कहा कि सच्चा समाजवाद चीन में नहीं आ सकता क्योंकि आर्थिक आधार के समाजवादी होने के बावजूद सामंती और पूंजीवादी विचार गायब नहीं हुए थे। इस दृष्टिकोण को आगे बढ़ाने के लिए माओ ने 'सतत् क्रांति' की अवधारणा सूत्रबद्ध की। इस आन्दोलन को शुरू करने के लिए मूल-आधार 'सर्वहारा वर्ग की तानाशाही' के तहत क्रान्ति को जारी रखने का सिद्धान्त था। माओ के अनुसार समाजवादी समाज की स्थापना यह सुनिश्चित नहीं करती है कि उस समाज का चरित्र क्रान्तिकारी होगा। शताब्दियों के सामंतवाद और दशकों के पूंजीवाद लोगों के दिमाग में इस प्रकार आरोपित थे कि समाजवादी विचार और विचार प्रक्रिया गौण हो गई। समाजवाद के दौर में भी पूंजीवाद वापसी की कोशिश करता है। यह, माओ ने कहा, सोवियत संघ में हुआ है, जहाँ पूंजीवादी पुनर्स्थापना (या संशोधनवाद, जैसा कि माओ इसे कहना पसंद करते थे) हुई है और चीन उसी खतरे में है। केवल एक तरीका जिससे इस खतरे को नाकाम किया जा सकता है वह वर्ग संघर्ष के माध्यम से है। सर्वहारा वर्ग (मजदूर वर्ग) को सचेत रहकर क्रान्तिकारी वर्ग युद्ध को जारी रखकर तथाकथित पूंजीवादी राह पर चलने वाले लोगों से लड़कर पूंजीवादी समाज को दुबारा उभरने से रोकना पड़ेगा। 'ये पूंजीवाद राह पर चलने वाले' पार्टी में माओ के सहयोगियों के अलावा कोई अन्य नहीं थे। इनमें चीन के राष्ट्रपति और पोलित ब्यूरो के सदस्य-लियू शाओकी, पार्टी के महासचिव देंग शियाओं पिंग, बीजिंग के मेयर पेंग जेन के साथ-साथ अनेक अन्य पार्टी के वरिष्ट पदाधिकारी थे।

16.6.2 पार्टी पर हमला

माओ कहने की इस हद तक चले गये कि कम्युनिस्ट पार्टी खुद 'पूंजीपतियों की गढ़' बन गयी थी, क्योंकि पूंजीवादी राह पर चलने वालों ने कीड़ों की तरह इसमें अपना रास्ता बना लिया था। मार्क्सवाद में एक कम्युनिस्ट पार्टी सर्वहारा वर्ग का अग्र दल (हरावल दस्ता) होता है, लेकिन यहाँ वह उसके स्वयं के नेता की नजर में 'पूंजीपतियों का मुख्यालय' प्रतीत हुई। इसलिए सर्वहारा क्रान्तिकारियों के लिए महत्वपूर्ण कार्य 'मुख्यालय पर बमबारी करना' था। चेयरमैन माओ ने बड़े अक्षरों में उपरोक्त शीर्षक के साथ एक पोस्टर लिखा और दूसरों से भी ऐसा ही करने का आग्रह किया और इस तरह से आन्दोलन को शुरू किया। सांस्कृतिक क्रान्ति के दौरान सीपीसी हमले का प्रमुख शिकार बनी।

16.6.3 बुद्धिजीवियों पर हमला

पूंजीवादी और सांमती तत्व, माओ का मानना था, पार्टी के बाहर भी भारी संख्या में मौजूद थे। चीन का पूरा शिक्षित वर्ग समाजवाद के रास्ते में एक मुख्य रोड़ा था क्योंकि उनकी विश्वास प्रणाली क्रांतिकारी विरोधी और समाजवाद विरोधी थी। येनान के शुद्धि अभियान (1942-1944) के समय से माओ जेडोंग बुद्धिजीवियों को लेकर शंकालू थे और 1957 में सौ फूल अभियान के दौरान उनका यह विचार ओर प्रबल हुआ। माओ के हमले और बुद्धिजीवियों के उत्पीड़न ने सास्कृतिक क्रान्ति के दौरान एक कठोर और तीव्र रूप ले लिया।

16.6.4 रेड गार्डस

जीपीसीआर को आधुनिक चीन के इतिहास में सबसे विचित्र राजनैतिक आन्दोलनों में से एक माना जाता है। यह महसूस करते हुए कि उन्हें पार्टी के सदस्यों से आन्दोलन के लिए पर्याप्त समर्थन नहीं मिलेगा, माओ ने चीन के युवाओं से बाहर निकलकर पूंजीवादी राह पर चलने वालों से टक्कर लेने की अपील की। उनका काम अपने इर्द-गिर्द सभी पूंजीवादी तत्वों की आलोचना, निन्दा और हमला करके चीन को वैचारिक रूप से शुद्ध करना होगा। चूंकि वे युवा थे और उनके दिमाग भ्रष्ट नहीं हुए थे इसलिए वे इस कार्य के लिए सबसे उपयुक्त थे। माओ के आह्वान पर प्रतिक्रिया दिखाते हुए लाखों युवा पुरुष और महिलाएं ज्यादातर छात्र और कुछ चौदह साल तक के किशोर भी इस आन्दोलन में कूद पड़े। वे रेड गार्डस थे। जो चीन के सभी हिस्सों से थे और माओ द्वारा उन्हें लाल विद्रोही कहा गया था। उन्हें तथाकथित पूंजीवादी राह पर चलने वालों के खिलाफ 'संघर्ष सत्र' आयोजित करने का काम दिया गया था। विभिन्न रेड़ गार्ड समूहों ने चीन के एक हिस्से से दूसरे हिस्से तक मुफ्त में यात्रा की, और विभिन्न इकाइयों और संगठनों में पूंजीवादी राह पर चलने वालों की पहचान की और उन्हें एक सार्वजनिक स्थान (ज्यादातर मामलों में एक स्कूल की इमारत में) में उपस्थित होने का आदेश देता, जहाँ पर एक बड़ा समूह इकट्ठा होकर उन पर सर्वहारा के पक्ष में ना होने और पूंजीवाद का समर्थन करने के आरोप लगाता। अनेक आरोप छिछले थे और कुछ झूठे भी। उदाहरण के लिए, एक ऐसे व्यक्ति से दोस्ती करना जिसके पिता ने गुओमिंदांग सेना में सेवा की थी, को श्रमिक वर्ग के खिलाफ होने के संकेत के रूप में देखा गया था। सत्र अन्त में आरोपी से अपेक्षा की गई कि वह अपनी गलती स्वीकार करे और एक लिखित स्वीकारोक्ति दे। इन्कार करने पर सख्त निरादर किया जाता जिसमें सार्वजनिक रूप से पिटाई और यातना के साथ-साथ उत्पीड़न भी शामिल होता था। अनेकों को 'पुनर्शिक्षा' श्रम शिविरों में भेजा गया और अन्य को कैद कर लिया गया। लगभग उन सभी ने जिन्हें पूंजीवादी राह पर चलने वाले कहा जाता था, अपनी नौकरी खो दी और उन्हें देश-द्रोही, प्रतिक्रान्तिकारी, सिद्धान्त त्यागी, गद्दार आदि करार दिया गया।

16.6.5 उत्पीड़न और दंड

पार्टी से जुड़े लोग जीपीसीआर के पहले शिकार थे : पूंजीवाद राह का अनुसरण करने वाले वरिष्ट अधिकारियों को उनकी सत्ता से हटा दिया गया, और उन्हें या तो जेल भेज दिया गया या शुद्धि के लिए श्रम सुधार शिविरों में। पार्टी की समितियाँ भंग कर दी गई और महीनों के अन्दर पूरी पार्टी बेतरतीब हो गई थी। राष्ट्रपति लियूशाओकी को कैद कर किया गया, जहाँ दो साल के अन्दर ही एक टूटे हुए व्यक्ति की तरह उनकी मृत्यु हो गई। प्रधानमंत्री जोउ एनलाई को आन्दोलन के शुरुआती चरण में दर किनार कर दिया गया था। देंग शियाओपिंग, जो बाद में चीन के सर्वोच्च नेता बने, उन्हें बीजिंग की सड़कों पर विदुषक की टोपी, जिस पर यह शीर्षक लिखा था : 'मैं पूंजीवादी राह पर चलने वाला नम्बर दो हूँ', पहना कर घुमाया गया। इन सभी कार्यों को अनौपचारिक रूप से लिया गया था, माओ के निर्देशों को छोड़कर कोई आधिकारिक आदेश नहीं थे और माओ के निर्देश भी बहुत सामान्य और अस्पष्ट थे, अक्सर पोस्टर के रूप में। जिन पर हमला किया गया, उनको कोई कानूनी आश्रय भी नहीं था।

पार्टी पर हमले से ज्यादा इस आन्दोलन का सबसे विनाशकारी प्रभाव चीन के बुद्धिजीवियों पर पड़ा। माओ को पता था कि अधिकांश बुद्धिजीवी, विकास के पक्ष में थे, न कि समतावाद के। इसलिए उन्हें प्रतिक्रान्तिकारी के रूप में 'लोगों के दुश्मनों' की श्रेणी में देखा गया था। एसईएम के दौरान उनमें से अनेक को दूर-दराज और ग्रामीण इलाकों में रहने और काम करने में कठिनाई का सामना करना पड़ा था, लेकिन जीपीसीआर में रेड़ गार्डस और राज्य अधिकारियों द्वारा उन पर सबसे असामान्य तरीके से हमला किया गया था। कई वैज्ञानिकों को अपने शोध को जारी रखने से रोका गया और उनकी प्रयोगशालाओं को इस आधार पर बन्द कर दिया गया कि यह शोध आम जनता के लाभ के लिए नहीं बल्कि उनके स्वयं की पदोन्नति और प्रसिद्धि के लिए था। सामाजिक वैज्ञानिकों और लेखकों के लेखन और पांडुलिपियों को इस आधार पर जला दिया गया था कि वे सर्वहारा वर्ग के लिए नहीं थे।

स्कूल और विश्वविद्यालय व्यवहारिक रूप से दस साल के लिए बन्द हो गये थे। स्कूलों और विश्वविद्यालयों में वरिष्ट प्रोफेसरों और प्रशासकों पर हमला किया गया और उन्हें उनके पदों से हटा दिया गया। जिन पर पूंजीवादी विचारों को प्रश्रय देने के आरोप थे उन्हें अपमानजनक कार्य दिये गये थे। उदाहरण के लिए, कुछ विश्वविद्यालयों के अध्यक्षों (कुलपतियों) को शौचालय साफ करने के लिए मजबूर किया था। कई परिसरों को शहरों से बाहर स्थानातंरित कर दिया गया और उन्हें दूर-दराज के क्षेत्रों में सरका दिया गया। डिग्रियों को एक व्यक्ति की वर्ग की पृष्ठभूमि के आधार पर वितरित किया गया ना कि परीक्षाओं के आधार पर, जिनको खत्म कर दिया गया था। शिक्षाविदों और शोधकर्त्ताओं ने जिन्होंने अपने कॅरियर की शुरुआत ही की थी, अपने जीवन के दस साल खो दिये। सांस्कृतिक क्रान्ति ने चीन की उच्च-शिक्षा प्रणाली को गंभीर रूप से खतरे में डाल दिया।

16.6.6 जीपीसीआर के प्रथम चरण का अंत

सांस्कृतिक क्रान्ति के पहले तीन वर्षों में अराजकता और हिंसा देखी गई। रेड गार्डस को ट्रेनों या बसों से चीन के किसी भी हिस्से की यात्रा करने के लिए मुफ्त पास मिलते थे। उन्होंने चीन के अल्पसंख्यक क्षेत्रों जैसे शिनजिआंग, तिब्बत और आंतरिक मगोंलिया को भी नहीं बख्शा, जहाँ भिक्षुओं, लामाओं और इमामों पर हमलों के अनेक उदाहरण सामने आए। चीन के अल्पसंख्यकों के लिए भी सांस्कृतिक क्रांति एक डरावना सपना थी। समय-समय पर, रेड गार्डस को बीजिंग में आमंत्रित किया जाता था, जहाँ उन्हें माओ

जेडोंग, लिनबियाओं और अन्य नेताओं द्वारा तियानआनमैन स्कावायर की प्राचीर से उनका अभिवादन करके उन्हें सम्बोधित किया जाता था। रेड गार्डस हमेशा अपने साथ चैयरमेन माओ के उद्धरणों की एक प्रति लेकर चलते थे, जिसे लिटिल रेड़ बुक के नाम से जाना जाता है। लिटिल रेड़ बुक की एक प्रति रखना रेड़ गार्डस (और बाद में दुनियाभर के माओवादी समूहों के लिए) के लिए गर्व की बात थी। माओ ने वास्तव में क्रान्तिकारी समाज का सूत्रपात करने के लिए रेड़ गार्डस पर भरोसा किया था, लेकिन उनकी सक्रियता के कुछ वर्षों के भीतर वे गुटों और समूहों में विभाजित हो गये। प्रत्येक रेड़ गार्ड समूह यह दिखाना चाहता था कि वह अन्य की तुलना में अधिक माओवादी था। 1968 में बीजिंग और शंघाई की सड़कों पर बड़े पैमाने पर कानून व्यवस्था का मुद्दा सामने आया। नागरिक पुलिस भी अपने वरिष्ट अधिकारियों पर हुए हमलों के कारण एक अव्यवस्था की स्थिति में थी और इसलिए परिस्थिति को संभालने की स्थिति में नहीं थी। व्यवस्था स्थापित करने के लिए और सामान्य स्थिति की बहाली के लिए माओ के पास पीएलए का उपयोग करने के अलावा और कोई विकल्प नहीं था। पहले से ही राजनैतिक रूप से प्रभावित पीएलए ने तुरंत कार्यवाही की और 1969 में सभी रेड़ गार्डस समूहों को भंग कर दिया। चीन पीएलए के शासन के तहत आ गया। पार्टी और सरकार बुरी तरह से अव्यवस्थित थे और चीन की कमान संभालने के लिए पीएलए के अलावा कोई अन्य संस्था नहीं थी।

16.6.7 जीपीसीआर : बाद का चरण और लिन बियाओ का उत्थान और पतन

इससे पहले 1968 में यह घोषणा की गयी थी कि मार्शल लिन बियाओ माओ के उत्तराधिकारी होंगे। इससे पूरी दुनिया में और विशेष रूप से चीन के बाहर माओवादी आन्दोलनों को धक्का लगा क्योंकि कम्युनिस्ट पार्टियाँ किसी नेता की मृत्यु से पहले उत्तराधिकारियों की घोषणा नहीं करती हैं। इसका मतलब यह था नागरिक मामलों में चीनी सेना की अधिक भूमिका थी। चकनाचूर हुई पार्टी समितियों को क्रान्तिकारी समितियों के रूप में पुनर्गठित किया गया, लेकिन मजबूत पीएलए के प्रतिनिधित्व के साथ। सीपीसी की नौवीं काँग्रेस के द्वारा अगस्त 1969 में पार्टी को बहाल किया गया था, जहाँ लिन बियाओं ने घोषणा की कि जीपीसीआर का सफलतापूर्वक समापन हो गया है। काँग्रेंस में अपनी रिपोर्ट में सतत् क्रान्ति के सिद्धान्त को चीन की मार्गदर्शक विचारधारा के रूप में बारम्बार दोहराया। यह भी कहा गया कि चीन को वास्तव में समाजवादी समाज बनने से पहले कई ओर सांस्कृतिक क्रान्तियों की आवश्यकता है।

जीपीसीआर का अराजक और उपद्रवी भाग 1969 तक खत्म हो गया था, लेकिन आन्दोलन में अपनायी गई नीतियों और उपायों का 1976 में माओ की मृत्यु तक पालन किया गया। पूरे पार्टी तन्त्र में अव्यवस्था होने के कारण चीनी राज्य के मामलों का उत्तरदायित्व अगर कहा जाए तो एक 'अतिरिक्त सवैंधानिक प्राधिकरण' ने ले लिया था। लिन बियायो का शंघाई के कट्टरपंथियों द्वारा विरोध किया गया था, एक समूह जिसमें माओ की चौथी पत्नी जियांगछिंग, भी शामिल थी और 1970-71 में एक सत्ता संघर्ष शुरू हुआ। सितम्बर 1971 में चीनी मिडिया ने दुनियाँ को बताया कि लिन बियाओ ने चैयरमेन माओ के खिलाफ निष्फल तख्ता पलटने की कोशिश की थी, और सोवियत संघ की ओर भागने की कोशिश करते हुए एक विमान दुर्घटना में उनकी मृत्यु हो गयी थी। इस कहानी में यकीन करने वाले बहुत कम लोग थे। स्वीकार की गई व्याख्या यह थी कि पीएलए प्रमुख और रक्षामन्त्री शंघाई कट्टरपंथियों के साथ सत्ता साझा करने के अनिइच्छुक थे, इसलिए उनकी शक्तियों को छीन लिया गया और उन्हें एक विमान में देश छोड़ने के लिए कहा गया और जैसे ही उसनें आंतरिक मंगोलिया के ऊपर से उड़ान भरी, उसे मार गिराया गया।

16.6.7.1 जाऊ एनलाई (Zhou Enlai) पुनः जिम्मेदारी में

1970 के दशक के पूर्वार्द्ध में चीन और अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में बड़े बदलाव हो रहे थे। चीन में भारी अव्यवस्था को देखकर माओ जोऊ एनलाई को प्रशासनिक और विदेशी मामलों में वापिस लाए। यद्यपि चीनी प्रधानमंत्री को भले ही उन्हें जीपीएसआर के प्रारंभिक वर्षों में नजरअंदाज कर दिया गया था लेकिन लीयू शाऊकी और देंगशियाओ पिंग की तरह सत्ता से बेदखल नहीं किया गया था, (शायद माओ के उनके प्रति व्यक्तिगत स्नेह के कारण)। इस समय जब सब कुछ अराजक था, जोऊ एनलाई ने चीन के प्रशासनिक व्यवस्था और पार्टी तन्त्र के पुनर्निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। रेड गार्डस के हमलों के दौरान जिन पर हमला किया गया और जिन्हें अपमानित किया गया, उनके पुनर्वास की प्रक्रिया शुरू हो गई। अनेक पार्टी कैडर जो अपने पदों को खो चुके थे उन्हें वापस लाया गया। देंग शियाओ पिंग जिनके पास एक संगठन का व्यक्ति होने की प्रतिष्ठा थी, बहाल किये गये लोगों में एक थे। (यह कहा जाता है कि डेंग के पुनर्वास से सांस्कृतिक क्रांति समूह असहज था और जो जोऊ एनलाई के निधन के बाद अप्रैल 1976 में उसे एक बार फिर निकाल दिया गया)। माओ को इस बात का एहसास था कि देश की प्रगति के लिए बुद्धिजीवियों का समर्थन आवश्यक था, इसलिए बड़ी संख्या में बुद्धिजीवियों का पुनर्वास करने का निर्णय लिया गया।

16.6.7.2 चीनी-अमेरिकी मेल-मिलाप की शुरुआत

प्रधानमंत्री जोऊ एनलाई को विदेश नीति का व्यापक अनुभव था और माओ को इस महत्वपूर्ण समय में उनकी आवश्यकता थी। सोवियत संघ के साथ एक संक्षिप्त युद्ध के बाद दोनों देशों के बीच सम्बन्ध गंभीर रूप से तनावपूर्ण थे। चीनियों ने सोवियतों पर एक साम्राज्यवादी शक्ति होने और चीन के आसन्न दुश्मन होने का आरोप लगाया। 1971 में चीन संयुक्त राष्ट्र में एक स्थाई सदस्य के रूप में शामिल हो गया और ताइवान (चीन गणराज्य) को अपना स्थान गवाँना पड़ा)। 1972 में अमेरिकी राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने चीन के एक अर्ध-अधिकारिक यात्रा की। यह चीनी-अमेरिकी मेल-जोल की शुरुआत थी और 1978 के अंत तक दोनों में राजनयिक सम्बन्ध स्थापित हो गये। पश्चिमी दुनियाँ के साथ चीन के व्यापारिक और आर्थिक सम्बन्धों में वृद्धि हुई, साथ-साथ लोगों से लोगों के बीच सम्पर्क हुआ लेकिन सोवियत संघ के साथ सम्बन्ध खटास भरे रहे।

बोध प्रश्न 2

1) सोसलिस्ट एजुकेशन मूवमैन्ट पर एक संक्षिप्त वर्णन कीजिए।

....

....

....

2) सांस्कृतिक क्रांति की पृष्ठभूमि के वैचारिक औचित्य पर दस पंक्तियाँ लिखिए।

....

....

....

....

....

....

....

....

....

....

16.7 माओ की मृत्यु, 'गैंग ऑफ फोर' की गिरफ्तारी और हुआ गुओफेंग का उद्भव

सितंबर 1976 में माओ जेडोंग की मृत्यु हो गयी और कुछ ही दिनों में सांस्कृतिक क्रांति समूह के सभी चार सदस्यों को गिरफ्तार करके सलाखों के पीछे डाल दिया गया। उस समय उन्हें 'गैंग ऑफ फोर' कहा जाता था। माओ के उत्तराधिकारी के लिए अपेक्षाकृत कम जाने वाले प्रांतीय नेता हुआ गुओफेंग को पार्टी का चैयरमैन नियुक्त किया गया था। पर्यवेक्षकों का कहना था कि वह विकास मॉडल का समर्थन करने वालों और माओ के समतावादी मॉडल से चिपके रहने वालों के बीच एक मध्यमार्गी समझौतें के उम्मीदवार थे। हुआ बहुत कम समय के लिए सैन्य मामलों के आयोग (जिसे अब केन्द्रीय सैन्य आयोग कहा जाता है) के अध्यक्ष थे। किसी भी चीनी नेता के पास ये सभी तीनों पद एक साथ नहीं रहे हैं। एक बार गैंग ऑफ फोर का सफाया हो जाने के बाद डेंग शियाओं पिंग सत्ता में लौट आए लेकिन उन्होंने कोई वरिष्ट पद नहीं लिया।

16.8 सुधार काल

1977 में हुआ गुओफैंग ने पार्टी की ग्याहरवीं कॉंग्रेस में यह स्पष्ट कर दिया था कि वह नीतिगत मामलों में माओवादी मार्ग का अनुसरण करेंगे, जब उन्होंने कहा कि 'वर्ग संघर्ष एक महत्वपूर्ण कड़ी है'। चीन के राजनैतिक इतिहास में एक वास्तविक बदलाव तब आया जब दिसंबर, 1978 में ग्यारहवीं पार्टी कॉंग्रेस के तीसरे विस्तृत अधिवेशन में देंग शियाओं पेंग ने, जो केवल एक उप-प्रधानमंत्री थे, ने घोषणा की कि अब से चीन चार आधुनिकीकरणों के रास्ते पर चलने वाला था। ये उद्योग, कृषि, विज्ञान और प्रौद्योगिकी और राष्ट्रीय रक्षा के आधुनिकीकरण थे। इससे नीतियों में एक मौलिक बदलाव आया। माओ के समतावाद की जगह विकास ने ले ली। चार आधुनिकीकरणों को बाद में सुधार और खुल जाने का नाम दिया गया। इस नीति ने चीन को पूरी तरह बदल दिया है। बड़े पैमाने पर आर्थिक विकास का लक्ष्य रखते हुए तीन दशकों के भीतर चीन जापान से आगे और जीडीपी के हिसाब से संयुक्त राज्य अमेरिका से पीछे, दुनियाँ की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बन गया है। 1978 के बाद के युग में चीनी राज्य और समाज अपेक्षाकृत स्थायित्व के दौर से गुजरा है। तियानआनमैन स्कवायर की त्रासदी को छोड़कर कोई बड़ी उथल-पुथल नहीं हुई और शिक्षा, विशेषरूप से उच्च शिक्षा, को सरकारी समर्थन के साथ बड़ा प्रोत्साहन मिला। हालाँकि, तेजी से आर्थिक विकास एक कीमत के साथ आया है, क्योंकि पिछले दो दशकों में कुछ प्रमुख मुद्दे सामने आए हैं। जिनमें क्षेत्रीय असंतुलन, पर्यावरण में गिरावट, ग्रामीण शहरी विभाजन, भ्रष्टाचार, आय असमानता, लिंग भेदभाव, और अन्य शामिल हैं।

बोध प्रश्न 3

1. उत्तर-माओ काल के दौरान चीन में सुधारों का एक संक्षिप्त आकलन कीजिए।

....

....

....

16.9 सारांश

मुक्ति के बाद से हमने चीन के दो बिल्कुल विरुद्ध रूप देखें। 1978 तक की अवधि में हम सोवियत के तत्वाधान में पहला पुनर्निर्माण और साधारण विकास देखते हैं। भूमि सुधार और कृषि सहकारिताकरण लागू किया गया। साक्षरता और बुनियादी स्वास्थ्य सेवा में उल्लेखनीय सुधार हुआ। 1957 से हम एक अशान्त चीन को देखते हैं जिसमें आन्तरिक पार्टी संघर्ष एक नियम बन गया लेकिन माओ सर्वोच्च नेता होने के नाते राज्य तन्त्र को नियंत्रित करते हैं। उनकी समतावादी नीतियाँ विकास के लिए एक बाधा बन जाती हैं। सौ फूल आन्दोलन, दक्षिण-पंथी विरोधी अभियान, ग्रेट लीप फारवर्ड, समाजवादी शिक्षा आन्दोलन और अंत में सांस्कृतिक क्रांति, सभी एक सच्चे समाजवादी राज्य के माओवादी आदर्शों को बढ़ावा देने के प्रयास थे। माओ के बाद जो नेतृत्व सत्ता में आया उसने इन सभी नीतियों को त्याग दिया और एक विकास के मॉडल को अपनाया, जिसनें आज चीन को दुनियाँ की दूसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था बना दिया है।

16.10 शब्दावली

समतावाद : समानता।

सर्वहारा वर्ग : श्रमिक वर्ग।

अशांत : अव्यवस्थित और परेशान करने वाला।

मेल-जोल : सामान्य संबंधों की शुरुआत।

16.11 बोध प्रश्नों के उत्तर

बोध प्रश्न 1

1) भाग 16.2 देखें।

2) भाग 16.2 देखें।

बोध प्रश्न 2

1) भाग 16.5 देखें।

2) भाग 16.6 देखें।

बोध प्रश्न 3

1) भाग 16.8 देखें।

इस पाठ्यक्रम के लिए संदर्भ ग्रंथ

1) Rana Mitter: *Modern China: A Very Short Introduction.*

2) Immanuel C. Y. Hsu: *The Rise of Modern China.*

3) Jean Chesneaux, (et al): *China from the Opium Wars to the 1911 Revolution.*

4) Hu Sheng: *Imperialism and Chinese Politics.*

5) Jack Gray: *Rebellions and Revolutions; China from the 1800s to the 1980s.*

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

NOTES

ignou
THE PEOPLE'S
UNIVERSITY

MPDD/IGNOU/P.O. 6 K / September 2021

ISBN : 978-93-91229-55-9